भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या: 4677
उत्तर देने की तारीख : 23.03.2020

शास्त्रीय भाषा के प्रसार पर व्यय की गई निध

†4677. श्री दयानिधि मारनः

क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) विगत तीन वर्षों के दौरान शास्त्रीय भाषाओं जैसे संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और उड़िया के प्रचार पर वर्ष-वार और भाषा-वार कुल कितनी निधि व्यय की गई है;
(ख) उपरोक्त भाषाओं को विभिन्न तरीकों से किस प्रकार बढ़ावा दिया गया है और इसके अंतर्गत भाषा-वार, वर्ष-वार और राज्य-वारकौन-कौन से विभिन्न कार्यकलाप किये गए हैं;
(ग) उपरोक्त भाषाओं को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलने वाले व्यक्तियों की भाषा-वार संख्या कितनी है;
(घ) प्रत्येक भाषा के लिए निधि किस आधर पर आवंटित की जाती है;
(ङ) संस्कृत की तुलना में अन्य शास्त्रीय भाषाओं के प्रचार के लिए आवंटित निधि में भारी अंतर के क्या कारण हैं; और
(च) अन्य शास्त्रीय भाषाओं की अनदेखी करते हुए केवल संस्कृत के प्रचार के लिए बड़े आवंटन का औचित्य क्या है?

उत्तर
मानव संसाधन विकास मंत्री
(श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक')

(क) से (च) : सरकार की नीति शास्त्रीय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं का बढ़ावा देने की है। केन्द्रीय शास्त्रीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) चार शास्त्रीय भाषाओं अर्थात कन्नड़,तेलगु, मलयालम और उड़िया सहित सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का कार्य करता है। केन्द्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान (सीआईसीटी) नामक एक पृथक संस्थान है जो शास्त्रीय तमिल के विकास और संवर्धन हेतु कार्य करता है। भारत सरकार तीन सम विश्वविद्यालयों के माध्यम से संस्कृत को प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में डिग्री, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए संस्कृत भाषा में शिक्षण और अनुसंधान हेतु इन सम विश्वविद्यालयों को निधियां प्रदान की जाती हैं और संस्कृत भाषा के शास्त्रीय स्वरूप से संबंधित किसी कार्य को करने के लिए अलग से निधियां प्रदान नहीं की जाती। शास्त्रीय मलयालम और शास्त्रीय उड़िया के संवर्धन हेतु इन भाषाओं के केन्द्रों के रूप में अब तक कोई निधि प्रदान नहीं की गई है, यद्यपि इन्हें अनुमोदित किया जा चुका है, लेकिन स्थापित किया जाना बाकी है।

मानव संसाधनव विकास मंत्रालय द्वारा विगत तीन वर्षों के दौरान तीन शास्त्रीय भाषाओं के संवर्धन हेतु जारी/आबंटित निधियों का विवरण निम्नानुसार है :-

(रू. करोड़ में)

क्र.सं.	शास्त्रीय भाषा	2016-17	2017-18	2018-19
1	कन्नड़	0.91	0.92	0.92
2	तेलगु	1.00	1.00	0.99
3	तमिल	5.02	10.27	5.45

पुराने हस्तलिपियों, ज्ञान पाठ के अनुसंधान, उनके लिपियांतरण, डिजिटलीकरण और प्रकाशन इत्यादि को बढ़ावा सहित विभिन्न आधार पर शास्त्रीय भाषाओं को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

शास्त्रीय भाषाएं स्वत: प्राचीन भाषाएं भी होती हैं जिनका लगभग 1500 वर्षों अथवा उससे अधिक का इतिहास होता है। गतिशील इकाइयां होने के नाते, भाषाओं में समय के साथ परिवर्तन होता रहता है। केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार भारत की जनगणना में भी इस प्रकार का डाटा की गणना नहीं की जाती है।शास्त्रीय भाषा केन्द्रों को उनकी जरूरतों और आवश्यकताओं के आधार पर निधियां आबंटित की जाती हैं।

******